भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 25-08-2026

बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

अगस्त माह में राज्य में अब तक 126.7 मिमी वर्षा दर्ज की गई है, जो कि सामान्य से लगभग 42% कम है। जून की शुरुआत से लेकर अब तक, सीवान, लखीसराय और खगडिया को छोड़ कर, राज्य के सभी 35 जिलों में बारिश की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, विशेषकर जहानाबाद (**-63**%) और भागलपुर (**-60**%) में। अगस्त के महीने में, शिवहर, जहानाबाद, भागलपुर, भोजपुर और किशनगंज जिलों में भी वर्षा की भारी कमी (-60% से अधिक) देखी गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), पटना केंद्र के पूर्वानुमान के अनुसार, आने वाले 3-5 दिनों में राज्य के अधिकतम और न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। दिनाँक 26 अगस्त को राज्य के दक्षिण पश्चिमी जिलों (रोहतास, भभुआ, भोजपुर, बक्सर, अरवल और औरंगाबाद) में और 26-27 अगस्त के दौरान, उत्तर पश्चिमी जिलों (पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, गोपालगंज, सिवान और सारण) में, अनेक स्थानों पर मेघ-गर्जन / वज्रपात, तेज हवा (30-40 कि.मी./घंटा) के साथ भारी वर्षा होने की संभावना है। आने वाले 5 दिनों में राज्य के शेष उत्तरी और दक्षिणी जिलों में मानसूनी वर्षा की स्थिति कुछ कमजोर रहने की संभावना है। इस स्थिति में वर्षा की कमी/सूखे से जूझ रहे जिलों में, किसानों के लिए खरीफ की फसलों को बचाना एक चुनौती हो सकता है। ऐसे में, फसलों को इसके संभावित नुकसान से बचाने के लिए, राज्य के किसानों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- कम वर्षा/सूखे के दौरान, खेत को खरपतवार-मुक्त रखें और खेतों में पौधों की उचित संख्या सुनिश्चित करें।
- खेत में पौधों की सही संख्या बनाए रखने के लिए खाली जगहों पर पौधे लगाएं और घने पौधों को हटाएं।
- खेत की मेड़ों की मरम्मत करें ताकि खेतों से वर्षा/सिंचाई के जल के रिसाव को काफी हद तक रोक जा सके।
- खेत की सिंचाई तभी करें, जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें।
- खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गीला और सूखा' (AWD) सिंचाई पद्धति अपनाएँ।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु पलवार (मल्चिंग) अथवा जहाँ संभव हो, कोनो-वीडर का प्रयोग करें।
- धान की बुआई के 15-20 दिनों पर अंकुरण-बाद खरपतवारनाशी जैसे बिस्पायरीबैक सोडियम (सक्रिय तत्व) का 20-25 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव, खरपतवार की 2-3 पत्ती की अवस्था में करें।
- धान के खेतों में रोपाई के 50-55 दिनों पर एक निकौनी करें।
- धान के खेतों में, वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण- कल्ले फूटने की सक्रिय अवस्था एक सिंचाई अवश्य करें और इस अवस्था पर 25% अतिरिक्त नाइट्रोजन का प्रयोग करें।
- पानी की कमी वाले क्षेत्रों में या ऊपरी भूमि पर या जहाँ खेत ऊंची है या मेड़ पर, अरहर (प्रजाति: मालवीय 13, आईपीए 203, UPAS-120) लगाएं।
- बेहतर अंकुरण और एक समान फसल वृद्धि के लिए 2% KCl घोल से 6-8 घंटे तक बीज की प्राइमिंग (बीजों को रात भर पानी में भिगोना) करें।
- बीज की दर को 15-20% तक बढ़ाएँ और बुवाई से पहले बीजों को जैव-उर्वरक के मिश्रण (राइज़ोबियम + फास्फोरस-घुलनशील बैक्टीरिया (PSB) + ट्राइकोडर्मा से बीज उपचारित करें।
- पोषक तत्वों के रिसाव और वाष्पीकरण से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए नीम लेपित यूरिया का उपयोग करें।
- वर्षा की कमी के कारण, फसलों की वानस्पतिक वृद्धि के चरण में आने वाले तनाव जैसे सूखा या पोषण की कमी से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% यूरिया/ 2% KCl/ 1% KNO_3 या एन:पी:के (15:15:15) के घोल का छिड़काव करें।
- संभावित स्थितियों में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें।
- पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता बनाए रखने के लिए खाली खेत में सूखा-रोधी चारा वर्गीय फसल उगायें।